

✿ सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय: जेंडर मुद्दों की मुख्य अवधारणा (Main Concept of Gender Issues)

♦ परिचय (Introduction)

“जेंडर” (Gender) का अर्थ केवल स्त्री या पुरुष से नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना है जो यह निर्धारित करती है कि समाज में स्त्रियों और पुरुषों की भूमिकाएँ, अधिकार और कर्तव्य कैसे होने चाहिए।

जेंडर संबंधी मुद्दे (Gender Issues) समाज में व्याप्त असमानताओं, भेदभावों और लैंगिक पक्षपात को दर्शाते हैं।

इन मुद्दों को समझना आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत आवश्यक है ताकि समानता, सम्मान और समान अवसरों का वातावरण स्थापित किया जा सके।

♦ मुख्य अवधारणाएँ (Main Concepts of Gender Issues)

1. लैंगिक समानता (Gender Equality):

पुरुषों और महिलाओं को समान अवसर, अधिकार और संसाधन प्राप्त हों — यही लैंगिक समानता का मूल सिद्धांत है।

2. लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination):

जब किसी व्यक्ति के साथ उसके लिंग के आधार पर असमान व्यवहार किया जाता है, तो उसे लैंगिक भेदभाव कहते हैं।

3. लैंगिक भूमिकाएँ (Gender Roles):

समाज द्वारा निर्धारित वह अपेक्षाएँ या जिम्मेदारियाँ जो स्त्री या पुरुष के लिए उपयुक्त

मानी जाती हैं।

4. लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity):

यह वह दृष्टिकोण है जो समाज में जेंडर के प्रति संवेदनशीलता, सम्मान और समानता के विचारों को बढ़ावा देता है।

5. शिक्षा में लैंगिक समानता (Gender Equality in Education):

शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों और लड़कियों दोनों को समान अवसर एवं संसाधन उपलब्ध कराना, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता विकसित कर सकें।

6. सशक्तिकरण (Empowerment):

महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सक्षम बनाना ताकि वे अपने निर्णय स्वयं ले सकें।

7. पितृसत्तात्मक व्यवस्था (Patriarchal System):

एक सामाजिक व्यवस्था जिसमें पुरुषों का वर्चस्व होता है और महिलाओं को गौण भूमिका में रखा जाता है।

8. लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias):

समाज में स्त्रियों या पुरुषों के प्रति पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण, जो कई बार शिक्षा और रोजगार में बाधा बनता है।

-
- ♦ शिक्षा में जेंडर समानता की आवश्यकता (Need for Gender Equality in Education)
 - समान अवसर प्रदान करने के लिए

- समाज में न्याय और समरसता स्थापित करने हेतु
 - महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए
 - संवेदनशील और संतुलित समाज निर्माण के लिए
-

◆ निष्कर्ष (Conclusion)

जेंडर मुद्दे केवल महिलाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह पूरे समाज की संरचना और सोच से जुड़े हुए हैं।

एक शिक्षित समाज तभी विकसित हो सकता है जब वह लैंगिक समानता के सिद्धांत को अपनाए।

शिक्षक के रूप में हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कक्षा में कोई भी छात्र या छात्रा अपने लिंग के कारण भेदभाव का शिकार न हो।

जेंडर संवेदनशील शिक्षा (**Gender Sensitive Education**) ही एक न्यायपूर्ण, समानता-आधारित और प्रगतिशील समाज की नींव रख सकती है।

◆ उद्धरण (Quote)

“Gender equality is not a women’s issue — it is a human issue.”

(लैंगिक समानता महिलाओं का नहीं, बल्कि मानवता का मुद्दा है।)

■ सत्रिय कार्य (Sessional Work)

विषय: लैंगिक पक्षपात (Gender Bias)

- ◆ परिचय (Introduction)

लैंगिक पक्षपात का अर्थ है किसी व्यक्ति के साथ केवल उसके लिंग (Gender) के आधार पर भेदभाव करना।

यह भेदभाव समाज, परिवार, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

भारत जैसे विकासशील देश में यह समस्या लंबे समय से मौजूद रही है, जहाँ महिलाओं और बालिकाओं को कई बार समान अवसर नहीं मिलते।

- ◆ अर्थ (Meaning of Gender Bias)

“Gender Bias” शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है —

Gender अर्थात् लिंग, और **Bias** अर्थात् पक्षपात या झुकाव।

इसका आशय है कि किसी एक लिंग (अधिकतर पुरुष) को श्रेष्ठ या अधिक योग्य मानना और दूसरे लिंग (महिला) को कमतर समझना।

- ◆ लैंगिक पक्षपात के प्रकार (Types of Gender Bias)

1. शैक्षिक पक्षपात (Educational Bias):

बेटियों की शिक्षा पर कम ध्यान देना या उन्हें उच्च शिक्षा से वंचित रखना।

2. सामाजिक पक्षपात (Social Bias):

समाज में स्त्रियों को सीमित भूमिकाओं में बाँधना जैसे केवल घर तक सीमित रखना।

3. आर्थिक पक्षपात (Economic Bias):

समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों से कम वेतन देना।

4. राजनीतिक पक्षपात (Political Bias):

निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी को सीमित रखना।

5. सांस्कृतिक पक्षपात (Cultural Bias):

परंपराओं और रीति-रिवाजों के माध्यम से महिलाओं को पुरुषों से कम महत्व देना।

♦ लैंगिक पक्षपात के कारण (Causes of Gender Bias)

- पितृसत्तात्मक (Patriarchal) समाज व्यवस्था
- अशिक्षा और संकीर्ण सोच
- पारंपरिक मान्यताएँ और धार्मिक रुढ़ियाँ
- आर्थिक निर्भरता

- शिक्षा में लैंगिक असमानता

- ◆ लैंगिक पक्षपात के परिणाम (Effects of Gender Bias)

- महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी
- सामाजिक और आर्थिक असमानता
- शिक्षा और रोजगार में असंतुलन
- समाज के विकास में बाधा
- लैंगिक हिंसा और अन्याय में वृद्धि

- ◆ लैंगिक पक्षपात को दूर करने के उपाय (Measures to Reduce Gender Bias)

1. लैंगिक संवेदनशील शिक्षा (Gender Sensitive Education) को बढ़ावा देना।
2. लड़कियों और महिलाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना।
3. महिला सशक्तिकरण योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन।
4. परिवार और विद्यालय दोनों स्तरों पर समान व्यवहार को प्रोत्साहन देना।

5. मीडिया और पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना।

♦ निष्कर्ष (Conclusion)

लैंगिक पक्षपात समाज की एक गंभीर समस्या है, जो न केवल महिलाओं बल्कि पूरे समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

समानता तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को उसके लिंग से परे समान अधिकार, सम्मान और अवसर प्राप्त हों।

शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से ही हम लैंगिक पक्षपात को समाप्त कर एक न्यायपूर्ण और समान समाज की स्थापना कर सकते हैं।

♦ उद्धरण (Quote)

“लैंगिक समानता तभी संभव है जब सोच बदलेगी, न कि केवल कानून।”
